कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



इब्न बतूता का रिहला

- इब्न बतूता मोरक्को (तैंजियर) से 14वीं शताब्दी में भारत आया था।
- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के समय भारत आया।
- इब्न बतूता द्वारा अरबी भाषा में लिखा गया यात्रा वृतान्त रिहला कहा जाता है।
- इसमें चौदहवी शताब्दी में भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन के विषय में प्रचुर व रोचक जानकारियाँ प्राप्त होती है।
- इसका जन्म तैंजियर के सबसे सम्मानित व शिक्षित परिवारों में से एक, जो शरिया अथवा इस्लामी कानूनों पर अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध था, में हुआ था।
- इब्न बतूता ने कम उम्र में ही साहित्यिक व शास्त्ररूढ़ शिक्षा प्राप्त कर ली थी।
- इन्हें यात्राओं का शौक था, उसने नये-नये देशों व लोगों को जानने के लिए दूर-दूर की यात्राऐं की।
- वह पुस्तकों से प्राप्त ज्ञान के स्थान पर यात्राओं से अर्जित अनुभव को ज्ञान का महत्वपूर्ण स्त्रोत मानता था।
- भारत आने से पूर्व वह मक्का की तीर्थ यात्रा, सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान तथा अफ्रीका के कई प्रदेशों की यात्रा कर चुका था।
- मध्य एशिया के रास्ते 1333 ई. में स्थल मार्ग से सिंध पहुँचा।
- दिल्ली के सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक की ख्याति से प्रभावित होकर मुल्तान व उच्छ के रास्ते दिल्ली पहुंचा।
- सुल्तान ने इब्न बतूता की विद्वता से प्रभावित होकर उसे दिल्ली का काजी या न्यायाधीश नियुक्त कर दिया।
- सुल्तान से गलतफहमी होने पर उसे कारागार में डाल दिया गया।
- गलतफहमी दूर होने पर पुनः काज़ी पद पर पदस्थापित किया गया ।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

- 1342 में मंगोल शासक के पास सुल्तान के दूत के रूप में जाने का आदेश दिया।
- इब्न बतूता मध्य भारत के रास्ते मालाबार तट की ओर गया तथा वहां से मालद्वीप गया जहां वह 18 माह तक काजी के पद पर रहा।
- बंगाल व असम की यात्रा की।
- जहाज से सुमात्रा होते हुए चीनी बन्दरगाह जायतुन (आधुनिक नाम–क्वानझू) बन्दरगाह गया।
- 1347 ई. में चीन से वापसी।
- चीन के विषय में इब्न बतूता के वृतान्त की तुलना मार्को पोलो के वृतान्त से की जाती है। जिससे 13वीं शताब्दी में वेनिस से चलकर, चीन व भारत की यात्रा की थी।
- इब्न बतूता ने नवीन संस्कृतियों, लोगों, आस्थाओं, मान्यताओं आदि विषय पर सावधानी पूर्वक अपना वृतान्त लिखा है।
- इब्न बतूता के अनुसार उस समय यात्रा करना कठिन व जोखिम भरा कार्य था, उसके अनुसार–

  मुल्तान से दिल्ली – 40 दिन

  सिंध से दिल्ली – 50 दिन

  दौलतावाद से दिल्ली – 40 दिन
- जबकि ग्वालियर से दिल्ली की दूरी 10 दिन में तय की जा सकती थी।
- मुल्तान से दिल्ली यात्रा के दौरान उसके कारवाँ पर आक्रमण हुआ जिसमें वह घायल हो गया।
- वापस मोरक्को पहुँचने पर स्थानीय शासक के निर्देश पर उसकी कहानियों को दर्ज किया गया।

घोंसले से निकलता पक्षी

यह रिह्ला से लिया गया एक उद्धरण है: अपने जन्म स्थान तैंजियर से मेरा प्रस्थान गुरुवार को हुआ. .. मैं अकेला ही निकल पड़ा, बिना किसी साथी यात्री... या कारवाँ के जिसकी टोली में मैं शामिल हो सकूँ, लेकिन अपने अंदर एक अधिप्रभावी आवेग और इन प्रसिद्ध पुण्यस्थानों को देखने की इच्छा जो लंबे समय से मेरे अंत:करण में थी, से प्रभावित होकर।

इसलिए मैंने अपने प्रियजनों को छोड़ जाने के निश्चय को दृढ़ किया और अपने घर को ऐसे ही छोड़ दिया जैसे पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ देते हैं... उस समय मेरी उम्र बाईस वर्ष थी। इब्न बतूता 1354 में घर वापस पहुँचा, अपनी यात्रा आरंभ करने के लगभग तीस वर्ष बाद।

शिक्षा तथा मनोरंजन :–

- इब्न बतूता के यात्रा वृतान्तों/संस्मरणों को लेखबद्ध करने हेतु राजा ने इब्न जुजाई को नियुक्त किया।

LET'S LEARN TOGETHER
Download Mission Gyan App
भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- इब्न जुजाई प्रस्तावना में लिखता है कि राजा ने एक शालीन निर्देश दिया कि वे (इब्न बतूता) अपनी यात्रा में देखे गये शहरों का, अपनी स्मृति में बैठ गयी रोचक घटनाओं का एक वृतान्त लिखवायें।
- इब्न बतूता के पद चिन्हों पर चलते हुए 1400 से 1800 के मध्य भारत आये यात्रियों ने फारसी में कई यात्रा वृतान्त लिखे जिसमें अब्दुल रज्जाक समककंदी का वर्णन बहुत महत्वपूर्ण हैं जिससे 15वीं शताब्दी में विजय नगर साम्राज्य की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- 1620 ई. में महमूद वली बल्खी – भारत से सम्मोहित होकर कुछ समय सन्यासी भी बन गये थे।
- 1740 ई. में शेख अली हाजिन ने उत्तर भारत की यात्रा की।

यूरोपीय यात्री

- लगभग 1500 ई. में पुर्तगालियों का भारत में आगमन हुआ (1498 ई. में वास्को डी गामा कालीकट पहुंचा)
- इन यात्रियों में से कई लोगों ने भारतीय रीति-रिवाजों तथा धार्मिक प्रथाओं के विषय में विस्तृत वृत्तान्त लिखें।
- जेसुइट रॉबर्टो नोविली ने तो भारतीय ग्रंथों का यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद भी किया।
- सबसे प्रसिद्ध यूरोपीय लेखकों में दुआर्ते बरबोसा का नाम है जिन्होंने दक्षिण भारत में व्यापार व समाज का वर्णन किया।
- 1600 ई. के बाद बड़ी संख्या में डच, अंग्रेज व फ्रांसीसी यात्री भारत आये।
- फ्रांसीसी जौहरी ज्यों-बैप्टिस्ट तैवर्नियर ने कम से कम 6 बार भारत की यात्रा की। वह भारत की व्यापारिक स्थिति से बहुत प्रभावित था तथा उसने भारत की तुलना ईरान व ऑटोमन साम्राज्य से की है।
- इटालवी चिकित्सक मनूकी यूरोप वापस नहीं गये व भारत में ही बस गये।

फ्रांस्वा बर्नियर

- फ्रांस का निवासी फ्रांस्वा बर्नियर एक चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक तथा एक इतिहासकार थे।
- वह मुगल साम्राज्य में अवसरों की तलाश में भारत आया।
- 1656 ई. से 1668 ई. तक मुगल दरबार से नजदीकी से जुड़ा रहा।
- सम्राट शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र द्वारा शिकोह के चिकित्सक के रूप में कार्य किया था।
- बाद में आर्मीनियाई अमीर दानिशयंद खान के साथ बुद्धिजीवी व दार्शनिक के रूप में कार्य किया।

पुस्तक :- ट्रेवल्स इन मुगल एम्पायर

"पूर्व" और "पश्चिम" की तुलना

- बर्नियर ने देश के कई भागों की यात्रा की एवं उसे अपने वर्णन में शामिल किया।
- भारतीय प्रदेशों के वर्णन की तुलना वह यूरोपीय स्थिति से करता था।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- लगभग प्रत्येक दृष्टांत/वर्णन में उसने भारतीय विकास की स्थिति को यूरोप के मुकाबले दयनीय/कमजोर बताया है।
- हालांकि उसका वर्णन/आंकलन सदैव सटीक नहीं था।
- बर्नियर के मुगल सेना के साथ कई यात्राएँ की। कश्मीर कूच के वर्णन को उसने अपने वृत्तान्त में शामिल किया है।
- बर्नियर ने अपनी प्रमुख कृति को फ्रांस के शासक लुई चौदह को समर्पित किया।
- बर्नियर के कार्यों का फ्रांस में 1670–71 में प्रकाशन हुआ था।
- अगले 5 वर्षों में अंग्रेजी, डच, जर्मन तथा इतालवी भाषा में अनुवाद हो गया।
- 1670 से 1725 में मध्य बर्नियर का वृत्तान्त आठ (8) बार पुनमुर्दित हो चुका तथा 1684 तक तीन (3) बार अंग्रेजी में पुनमुर्दित हुआ था।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here